इकाई 24 प्रगतिवाद : स्वरूप और विकास

इकाई की रूपरेखा

24.0 उद्देश्य
24.1 प्रस्तावना
24.2 प्रगतिवादः पृष्ठभूमि
    24.2.1 युगीन परिस्थितियाँ
    24.2.2 साहित्यिक पृष्ठभूमि
24.3 प्रगतिवाद शब्द का प्रयोग और अर्थ
24.4 प्रगतिवाद की अन्तर्वस्तु
    24.4.1 ऐतिहासिक चेतना
    24.4.2 सामाजिक यथार्थदृष्टि
    24.4.3 परिवेश और प्रकृति के प्रति लगाव
    24.4.4 जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण
    24.4.5 मानवीय संबंधों में समानता
    24.4.6 भविष्योन्मुखी दृष्टि
24.5 प्रगतिवाद का अभिव्यंजना शिल्प
    24.5.1 रूप या शिल्प
    24.5.2 भाषा : काव्य भाषा (अलंकार, बिंब, प्रतीक)
    24.5.3 मूर्तिविधान : ऐतिहासिक मूर्त्तता
    24.5.4 छंद-लय
24.6 प्रगतिवाद के प्रमुख कवि
    24.6.1 नागार्जुन
    24.6.2 केदारनाथ अग्रवाल
    24.6.3 शमशेर बहादुर सिंह
    24.6.4 गजानन माधव मुक्तिबोध
    24.6.5 त्रिलोचन
24.7 प्रगतिवाद का महत्व
24.8 सारांश
24.9 अभ्यास
24.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें
24.11 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

24.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप बता सकेंगे कि :

- प्रगतिवाद आंदोलन का क्या अर्थ है?
- प्रगतिवाद के आरंभ होने के पीछे क्या कारण रहे हैं?
- प्रगतिवाद आंदोलन की सीमा क्या है?
- प्रगतिवाद की अन्तर्वस्तु में ऐतिहासिक चेतना, वर्गचेतन प्रधान दृष्टि, और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का क्या अर्थ है?
- प्रगतिवाद काव्य का रूप और शिल्प कैसा है? और
- प्रमुख प्रगतिवादी कवि कौन-कौन हैं?

24.1 प्रस्तावना

इस इकाई में आप हिंदी साहित्य में प्रगतिवाद आंदोलन के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। हम आपको यह स्पष्ट कर दें कि "प्रगतिवाद" एक साहित्यिक आंदोलन तो है किन्तु सभी "वाद"

आंदोलन के रूप में विकसित नहीं होते। जैसे "छायावाद" एक व्यापक साहित्य प्रवृत्ति है तो "प्रयोगवाद" एक काव्य प्रवृत्ति। किन्तु प्रगतिवाद एक साहित्यिक आंदोलन के रूप में ही विकसित हुआ। अतः उसे कथा साहित्य, काव्य, आलोचना अर्थात् समस्त साहित्यिक विधाओं में अभिव्यक्ति मिली। इस इकाई में हम "प्रगतिवाद" के स्वरूप और विकास की चर्चा कविता के संदर्भ में करेंगे। अतः प्रगतिवादी काव्य की सामान्य विशेषताओं को बताते हुए हम प्रमुख प्रगतिवादी कवियों का परिचय भी देंगे। आप देखेंगे कि किस प्रकार एक साहित्यिक आंदोलन पैदा होता है, कैसे उसका विकास होता है और समाज से उसका कैसा रिश्ता बनता है।

24.2 प्रगतिवाद : पृष्ठभूमि

प्रगतिवाद की पृष्ठभूमि के रूप में हम उस युग की उन परिस्थितियों का अध्ययन करेंगे जिनके कारण प्रगतिवाद एक साहित्यिक आंदोलन के रूप में पैदा हुआ।

24.2.1 युगीन परिस्थितियाँ

प्रगतिवाद का उदय सन् 1930 के बाद हुआ। सन् 1930 तक विश्व में प्रथम महायुद्ध और रूस की क्रांति जैसी घटनाएँ घट चुकी थीं। रूस में ज़ारशाही के खिलाफ की गई सफल क्रांति का प्रभाव धीरे-धीरे विश्व में बाकी जगह पड़ना शुरू हो गया था। भारत में आज़ादी का आंदोलन जोर पकड़ रहा था और 1930 तक राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस में वामपंथी दल कायम हो चुका था। किसान, मजदूर आंदोलन एकजुट होकर शक्तिशाली हो रहे थे। साहित्य में प्रेमचंद "गबन" (1930) में यह उम्मीद बंधा रहे थे कि पांच-दस बरस बाद समाज और राजनीति में किसानों, मजदूरों की जगह महत्वपूर्ण होगी। सविनय अवज्ञा आंदोलन, लगान बंदी आंदोलन, किसान सभा की स्थापना की दिशा में प्रयत्न – ये घटनाएँ भारतीय समाज में हो रहे सक्रिय बदलाव को सूचित कर रहीं थीं। इसके बाद विश्व और भारत में घटने वाली प्रमुख घटनाओं (द्वितीय विश्व युद्ध से उत्पन्न संकट, बंगाल का अकाल, नौ सेना विद्रोह, हिंदुस्तान-पाकिस्तान का विभाजन, मुस्लिम सांप्रदायिक दंगे, कांग्रेस के हाथों में शासन सत्ता का आना) के बारे में डॉ. नामवर सिंह लिखते हैं – "इन घटनाओं ने कमोबेश हमारी आर्थिक, सामाजिक और नैतिक स्थिति को भी प्रभावित किया। निम्न मध्य वर्ग की स्थिति पहले से भी अधिक खराब हुई और किसान मज़दूरों में भयंकर असंतोष फैला।" (आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, पृष्ठ 92)। इन्हीं युगीन परिस्थितियों के कारण वर्ग चेतना और वर्ग संघर्ष की भावना पैदा हुई और यही भावना प्रगतिवाद की यथार्थ दृष्टि की प्रेरक तत्व बनी तथा साहित्य में प्रगतिवाद के विकास का आधार भी।

24.2.2 साहित्यिक पृष्ठभूमि

प्रगतिवाद जब शुरू हुआ उस समय साहित्य में छायावाद एक साहित्य प्रवृत्ति के रूप में अपने विकास के बाद अब उतार पर था। यह तो आप जानते ही हैं कि कोई भी साहित्यिक आंदोलन या साहित्यिक प्रवृत्ति एकाएक प्रकट नहीं हो जाती। उसके लक्षण पहले से ही साहित्य में प्रकट होने लगते हैं। इसी प्रकार प्रगतिवाद से पहले छायावाद में सामाजिक यथार्थ की चेतना प्रत्यक्ष रूप से अभिव्यक्त होने लगी थी। कविता कवि के मन की गुफा से बाहर निकल कर अपना यथार्थपरक सामाजिक उत्तरदायित्व महसूस कर रही थी। 1921 में निराला ने कविता लिखी: "जब कड़ी मारें पड़ी, दिल हिल उठा"। 1929 में "परिमल" की भूमिका में निराला ने कबिता की मुक्ति को मनुष्य की मुक्ति के प्रश्न से जोड़ा। छायावादी धीरे-धीरे सूक्ष्मता की ओर बढ़ता हुआ दुर्बोध होता जा रहा था। यह सही है कि छायावादी काव्य ने यदि एक ओर द्विवेदी युगीन अभिधात्मकता के विरोध में सांकेतिकता, कल्पना और भाषा के धरातल पर काव्य को गरिमा प्रदान की तो दूसरी ओर व्यक्ति और प्रकृति और प्रेयसी नारी को तथा व्यक्ति के भीतरी संसार को तथा उसके अस्तित्व के प्रश्न को भी काव्य का विषय बनाया किन्तु व्यक्ति के सामाजिक यथार्थ को वह साहित्य का विषय नहीं बना सका। पंत ने भी स्वीकार किया कि छायावाद में युग को वाणी देने की शक्ति नहीं रह गयी थी। "ग्राम्या", "युगवाणी" के पीछे नये यथार्थ की चेतना स्पष्ट है। निराला ने आगे चलकर "कुकुरमुत्ता" और "नये पत्ते" में प्रगतिवादी काव्य दृष्टि को मज़बूत आधार दिया। अतः कविता की अन्तर्वस्तु और रचनाविधान में परिवर्तन करके व्यक्ति सीमित या रहस्यमय रूमानी वृत्ति का त्याग करके छायावादी कवियों ने ही प्रगतिवाद का रास्ता तैयार किया।

24.3 'प्रगतिवाद' शब्द का प्रयोग और अर्थ

कुछ लोग प्रगतिवाद और प्रगतिशील साहित्य में विरोध करते हैं। इनका मानना है कि प्रगतिशील शब्द अधिक व्यापक है — और इसमें मानव के व्यापक सरोकार जुड़ते हैं और प्रगतिवाद शब्द केवल उस साहित्य का बोध कराता है जो मार्क्सवादी विचारधारा से प्रेरित होकर या उसके आधार पर लिखा गया हो। वस्तुतः प्रगतिवाद और प्रगतिशील शब्द का झगड़ा कोरा बुद्धिविलास है। आज प्रगतिवाद शब्द से अभिप्राय उस साहित्यिक प्रवृत्ति से है जिसमें एक प्रकार की इतिहास चेतना, सामाजिक यथार्थ दृष्टि, वर्गचेतन विचारधारा, प्रतिबद्धता या पक्षधरता, गहरी जीवनासक्ति, परिवर्तन के लिये सजगता और एक प्रकार की भविष्योन्मुखी दृष्टि मौजूद हो। रूप के स्तर पर प्रगतिवाद एक सीधी-सहज-तेज-प्रखर, कभी व्यंग्यपूर्ण आक्रामक काव्यशैली का वाचक है।

वैसे प्रगतिशील साहित्य अंग्रेज़ी के "प्रोग्रेसिव लिटरेचर" का अनुवाद है। अंग्रेज़ी में इस शब्द का प्रयोग 1935 ई. के आसपास हुआ जब पेरिस में "प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन" नामक संस्था का पहला अधिवेशन हुआ। हिंदुस्तान में इसके एक वर्ष बाद ही 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ का प्रथम अधिवेशन लखनऊ में हुआ जिसके अध्यक्ष थे — प्रेमचंद।

प्रगतिवाद : सीमा और व्याप्ति
प्रगतिवाद का विरोध करने वाले ही उसकी सीमा यह बताते रहे हैं कि वह मार्क्सवाद का साहित्यिक रूपांतर मात्र है। पर यह सब जानते हैं कि यदि प्रगतिवाद नाम से परिचित काव्य प्रवृत्ति के महत्वपूर्ण कवियों में नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर बहादुर सिंह, गजानन माधव मुक्तिबोध और त्रिलोचन जैसे बड़े कवि हैं तो उनका काम केवल मार्क्सवाद के सिद्धांत विवेक के जरिए नहीं चल सकता। मार्क्सवाद में उनकी आस्था जहाँ व्यापक जीवन ज्ञान में और गहरी जीवनासक्ति में सहायक हुई है वहीं वे प्रगतिवाद को समर्थ काव्य प्रवृत्ति के रूप में विकसित करने के लिये, यथार्थ के नये रूपों की समझ के अनुरूप, नयी काव्य शैली का विकास करते रहे हैं।

वैसे एक साहित्यिक आंदोलन के रूप में प्रगतिवाद का इतिहास मोटे तौर पर 1936 से शुरू होने के बाद के लगभग बीस वर्षों का इतिहास है किन्तु यह "साहित्य में स्वस्थ सामाजिकता, व्यापक भावभूमि और उच्च विचार के निरंतर विकास का इतिहास है, जो न केवल राजनीतिक जागरण से आरंभ होकर क्रमशः जीवन की व्यापक समस्याओं की ओर, आदर्शवाद से आरंभ होकर क्रमशः यथार्थवाद की ओर और यथार्थवाद से आरंभ होकर क्रमशः स्वस्थ सामाजिक यथार्थवाद की ओर अग्रसर होता जा रहा है"। (आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, पृष्ठ 84)।

अतः व्यापक अर्थों में प्रगतिवाद न स्थिर मतवाद है न स्थिर काव्य रूप। उसमें निरंतर विकास हुआ है। आज प्रगतिशीलता के व्यापक अर्थ में ऐतिहासिक चेतना, जीवन विवेक, जीवनानुभवों के विस्तार, यथार्थ के मूल रूपों की समझ, जीवनधर्मी सौन्दर्यबोध, प्रकृतिबोध का उल्लेख किया जाता है, फिर भी जीवन को देखने की यथार्थवादी दृष्टि विशेष अर्थ में मार्क्सवादी दृष्टि को यहां प्रमुखता प्राप्त है। प्रगतिवाद के विकास में अपना योगदान देने वाले परवर्ती कवियों में केदारनाथ सिंह, धूमिल, कुमार विमल, अरुण कमल, राजेश जोशी के नाम उल्लेखनीय हैं।

बोध प्रश्न 1
सही उत्तर पर चिह्न लगाइये।

1) प्रगतिवाद एक ....
   क) प्रवृत्ति है
   ख) आंदोलन है

2) प्रगतिवादी साहित्यिक आंदोलन ......
   क) विदेशी विचारधारा का प्रतिफलन है।
   ख) युगीन परिस्थितियों की देन है

3) प्रगतिवाद किसे कहते हैं, चार पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

24.4 प्रगतिवाद की अन्तर्वस्तु

प्रगतिवाद की अन्तर्वस्तु में ऐतिहासिक चेतना अर्थात् अपने समय, अपने युग की समझ, सामाजिक यथार्थदृष्टि जिसे वर्गचेतन प्रधान दृष्टि भी कहा जाता है तथा अपने परिवेश और प्रकृति के प्रति लगाव, जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण प्रमुख बिन्दु हैं। इसके अतिरिक्त प्रगतिवादी कवि मानवीय संबंधों में समानता का पक्षधर है। वर्ग विभाजित समाज में वो परिवर्तन की भी कल्पना करता है अतः भविष्य के प्रति वो आशावान हैं। प्रगतिवाद की अन्तर्वस्तु की इन विशेषताओं को, आइये विस्तार से समझें।

24.4.1 ऐतिहासिक चेतना

प्रगतिवादी काव्य की अंतर्वस्तु में ऐतिहासिक चेतना महत्वपूर्ण है। प्रगतिवाद कवि को कालातीत होने की छूट नहीं देता। अपने समय का विवेक, अपने समय की राजनीतिक, सामाजिक वास्तविकता का बोध यही ऐतिहासिक चेतना है। प्रगतिवाद में कविता और राजनीति का जो घनिष्ठ संबंध दिखाई देता है वह इसी चेतना का परिणाम है। "शासन की बन्दूक" नागार्जुन की प्रसिद्ध कविता है। इसमें सत्ता द्वारा किए जा रहे बर्बर दमन का चित्र है और कवि में पैदा हुई विद्रोह भावना का भी संकेत है। यह दमन यदि निश्चित ऐतिहासिक समय का संकेत करता है तो विद्रोह भाव भी एक समय-विशेष की सूचना देने वाला है।

खड़ी हो गयी चांपकर कंकालों की हूक
नभ में विपुल विराट सी यह शासन की बन्दूक
उस हिटलरी गुमान पर सभी रहे हैं थूक
जिसमें कानी हो गयी शासन की बन्दूक।

सत्य स्वयं घायल हुआ, गयी अहिंसा चूक
जहां तहां दगने लगी शासन की बन्दूक
जली ठूंठ पर बैठ कर गयी कोकिला कूक
बाल न बांका कर सकी शासन की बन्दूक।

वह तानाशाही व्यवस्था अपने ही समय की है जिसके आगे लम्बे संघर्ष से प्राप्त मूल्य (अहिंसा/सत्य) व्यर्थ हो गये हैं। कोकिला भी इसी अपने समय की है जो दमनचक्र का प्रतिरोध करती है – वह जली ठूँठ पर बैठकर कूकती है अर्थात् दमन चक्र की धज्जियाँ उड़ाती है। मुक्तिबोध जैसे कवि के यहाँ यह ऐतिहासिक चेतना अधिक सघन जटिल होकर आती है।

24.4.2 सामाजिक यथार्थ-दृष्टि

प्रगतिवादी कवि के पास सामाजिक यथार्थ को देखने की विशेष दृष्टि होती है। एक **वर्गचेतन प्रधान** दृष्टि। नागार्जुन यदि दुखरन झा जैसे प्राइमरी स्कूल के अल्पवेतनभोगी मास्टर का यथार्थ चित्र अंकित करते हैं तो सामाजिक विषमता के यथार्थ को ध्यान में रखते हुए इस सरल यथार्थ को कविता में व्यक्त करने के लिए भी यथार्थ रूपों की समझ जरूरी है। कवि का वास्तव बोध और वस्तुपरक निरीक्षण दोनों पर ध्यान जाना चाहिए।

घुन खाये शहतीरों पर की बारह खड़ी विधाता बाँचे
फटी भीत है छत चूती है आले पर विसतुइया नाचे
बरसा कर बेबस बच्चों पर मिनट-मिनट में पाँच तमाचे
इसी तरह से दुखरन मास्टर गढ़ता है आदम के साँचे।

नागार्जुन जैसे प्रगतिशील-यथार्थवादी कवि की दृष्टि सामाजिक यथार्थ के अनेक रूपों की ओर जाती है। कभी सामाजिक यथार्थ का वह भयानक रूप सामने आता है जो बहुत अधिक विक्षुब्ध कर जाता है। यह प्रखर सात्विक क्रोध भी ध्यान देने योग्य है – (सामाजिक विषमता से पैदा होने वाली पीड़ा पर ध्यान जाना चाहिए)।

मन करता है
मैं नंगा होकर चिल्लाऊँ
. . . . . .
मन करता है
मैं उस अगस्त्य-सा पी डालूँ सारे समुद्र को अंजलि से
उस अतल वितल में तब मुझको
मुर्दा-भगवान दिखाई दे
उस महामृतक को ले आऊँ फिर इस तट पर
अंत्येष्टि करूँ, लकड़ी तो बेहद महँगी है
इस बालू में दफना दूँ
नंगा करके।

इसका यह अर्थ नहीं कि प्रगतिवादी काव्य का यथार्थबोध सर्वत्र एक-सा है। उसकी शक्ति है- उसकी बहुरूपात्मक विविधता।

24.4.3 परिवेश और प्रकृति के प्रति लगाव

प्रगतिवाद में प्रकृति और परिवेश के प्रति कवि का लगाव भी ध्यान आकृष्ट करता है। बाँदा की, बुन्देलखंड की प्रकृति केदारनाथ अग्रवाल की कविता में इतनी सहज रची-बसी है कि वह कविता का सबसे प्रेरक तत्व जान पड़ती है। प्रगतिवादी कवि प्रकृति में जिस जीवन सक्रियता का आभास पाता है उसके लिए एक प्रकार का स्थानिक लगाव जरूरी है।

चढ़ी पेड़ महुआ, थपाथप मचाया
गिरी धम्म से फिर, चढ़ी आम ऊपर
उसे भी झकोरा, किया कान में "कू"
उतर कर भगी मैं हरे खेत पहुँची
वहाँ गेहुँओं में लहर खूब मारी,
पहर दो पहर क्या, अनेकों पहर तक
इसी में रही मैं।

प्रगतिवादी कवि के यहाँ प्रकृतिबोध भी यथार्थबोध, सामाजिक वास्तविकता के अनुभव से विच्छिन्न नहीं है। नागार्जुन के लिए धप केवल लुभाने वाली नहीं है वह तीखे यथार्थ को सामने लाने में सहायक है —

पूस-मास की धूप सुहावन
घिसे हुए पीतल-सी पांडुर
पूस-मास की धूप सुहावन
स्तनपायी निरोगी गौर छवि
शिशु के गालों जैसी मनहर
पूस-मास की धूप सुहावन
फटी दरी पर बैठा है चिर-रोगी बेटा
राशन के चावल से कंकड़ बीन रही पत्नी बेचारी
गर्भ-भार से अलस शिथिल है अंग-अंग
मुँह पर उसके मटमैली आभा
छप्पर पर बैठी है बिल्ली
किसके घर से जाने क्या कुछ खा आयी है
चला-चला कर जीभ स्वाद लेती ओठों का।

प्रकृति में जो "धूप सुहावन" है वह गरीबी का तीखा दुखद चित्र उपस्थित करने वाली है। दो स्थितियों का यह तनाव महत्वपूर्ण है। उसी से कविता बड़ी कविता बनती है।

24.4.4 जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण

प्रगतिशील कवि जीवन की स्वीकृति के कवि हैं। जीवनधर्मी लगाव उनके यहाँ रेखांकित करने की चीज है। "मुझे विश्वास है यह पृथ्वी रहेगी" यह सकारात्मक दृष्टिकोण प्रगतिवाद की महत्वपूर्ण विशेषता है। जहाँ आधुनिकतावादी रुझान वाले कवि हताश, पस्ती, निराशा, असहायता, अजनबीपन को अनुभवों में महत्वपूर्ण मानकर चलते हैं वहाँ प्रगतिवादी कवि कठिन अंधकार और भयानक निराशा में भी एक प्रकार के सकारात्मक दृष्टिकोण को जीवित

रखता है। गजानन माधव मुक्तिबोध के यहाँ अंधकार,संकट, निराशा और भय के बिंब बार-बार आते हैं पर वहीं सार्थक भविष्य की आकांक्षा भी अभिव्यक्ति प्राप्त करती है –

आत्म विस्तार यह
बेकार नहीं जायेगा
ज़मीन में गड़ी हुई देहों की खाक से
शरीर की मिट्टी से, धूल से
खिलेंगे गुलाबी फूल।
सही है कि हम पहचाने नहीं जाएँगे।
दुनिया में नाम कमाने के लिए
कभी कोई फूल नहीं खिलता है
हृदयानुभव-राग-अरुण
गुलाबी फूल, प्रकृति के गन्ध-कोष
काश, हम बन सकें।

(एक भूतपूर्व विद्रोही का आत्मकथन)

24.4.5 मानवीय संबंधों में समानता

इसे भी स्पष्ट अर्थ में देखना चाहिए। बिना भेद किए सभी मनुष्यों के प्रति प्रेम – यह प्रगतिवादी कवि को स्वीकार्य नहीं है। शोषक शोषित वर्गों का भेद उपेक्षणीय नहीं है। पर व्यापक अर्थ में मानवीय संबंधों में समानता उसके लिए आदर्श है। "नगई महरा" काव्यनायक हो सकते हैं। देवी सरस्वती भद्रकुलीन विद्वानों के यहाँ ही नहीं, किसानों के यहाँ भी आ सकती हैं। संघर्ष में स्त्री-पुरुष समानता महत्व की चीज है। इससे प्रगतिवादियों के वस्तु बोध, सौन्दर्य बोध में भिन्नता आई है। हरिजनगाथा (नागार्जुन) में नवजातक को जो गौरव दिया गया है, संत गरीबदास द्वारा उसका जो भविष्य लेख पढ़ा गया है, महत्वपूर्ण और साभिप्राय संकेत है –

होगा यह भारी उत्पाती
जुलुम मिटायेंगे धरती से
इसके साथी और संघाती।

केदारनाथ अग्रवाल ने पत्नी के प्रति सहज स्वरूप आकर्षण या प्रेम को जो अभिव्यक्ति दी है, वह इसी समानता के विवेक से आलोकित है।

24.4.6 भविष्योन्मुखी दृष्टि

प्रगतिवादी कवि यथास्थितिवादी नहीं हैं। वे सामाजिक परिवर्तन के पक्ष में हैं। सामाजिक परिवर्तन की उनकी कल्पना स्वच्छन्द स्वेच्छाचारी या अराजक नहीं है। वे वांछित दिशा में ही परिवर्तन की कल्पना करते हैं या प्रयत्न करते हैं। कविता उनके लिए सक्षम माध्यम है। भविष्योन्मुखी दृष्टि के अभाव में परिवर्तन की कामना का कोई अर्थ नहीं। यह नागार्जुन और मुक्तिबोध जैसे कवि बखूबी जानते हैं। भविष्योन्मुखी दृष्टि के अभाव में यह साहसपूर्ण स्वर अकल्पनीय है।

अब अभिव्यक्ति के सारे ख़तरे
उठाने ही होंगे
तोड़ने होंगे ही मठ और गढ़ सब
पहुँचना होगा दुर्गम पहाड़ों के उस पार
तब कहीं देखने मिलेंगी हमको
नीली झील की लहरीली थाहें
जिसमें कि प्रतिपल काँपता रहता
अरुण कमल एक।

अरुण कमल भविष्य की ही कल्पना है, भविष्य का ही प्रतीक है।

बोध प्रश्न 2

1 कोष्ठकों में दिये गये शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरा करें।

क) प्रगतिवादी काव्य की अंतर्वस्तु में .... चेतना महत्वपूर्ण है।
(वैयक्तिक/दार्शनिक/ऐतिहासिक)

ख) प्रगतिवादी काव्य दृष्टि .... दृष्टि है।
(व्यक्तिचेतना प्रधान/वर्गचेतना प्रधान/वर्गहीन)

ग) प्रगतिवादी कवि का प्रकृतिबोध .... से अनुप्राणित है।
(वैयक्तिक यथार्थ बोध/सामाजिक यथार्थ बोध)

घ) प्रगतिवादी कवि .... मानववादी हैं।
(सर्वथा/विवेकपूर्वक)

च) प्रगतिवादी कवि .... हैं।
(यथार्थवादी/यथास्थितिवादी)

24.5 प्रगतिवाद का अभिव्यंजना शिल्प

24.5.1 रूप या शिल्प

प्रगतिवाद के संबंध में यह धारणा बहुत प्रचलित है कि इस धारा के कवि वस्तु या कथ्य को ही महत्व देते हैं, रूप या शिल्प को नहीं। पर सच्चाई यह है कि रूप या शिल्प का विकास उन्हीं कवियों के यहाँ दिखाई देता है जो वस्तु की तरह शिल्प या रूप की चिन्ता भी करते रहे हैं। नागार्जुन के यहाँ रूप की जो आश्चर्यजनक विविधता है वह किसी से छिपी नहीं। वे दोहा भी लिखेंगे तो पूरी शक्ति के साथ। गीत जैसे रूपप्रकार के भीतर भी उन्होंने दुर्लभ संगठन का प्रमाण दिया है। केदारनाथ अग्रवाल ने गीतों और सुगठित चित्रों में अपने काव्य विवेक का प्रमाण दिया है। त्रिलोचन ने अवधी में बरवै लिखे हैं। शमशेर गजलों के लिए प्रसिद्ध हैं। मुक्तिबोध ने लंबी कविता को जो महाकाव्योचित संगठन दिया वह रूप के प्रति असावधान रहकर संभव नहीं। प्रगतिवादी कवियों ने लोक काव्य रूपों का भी आश्रय लिया। आल्हा या लावनी जैसे रूपों को अपनाया। पर ध्यान रहे कि रूपगत परिष्कार प्रगतिवादी कवियों का लक्ष्य नहीं है न रूपप्रकारवाद जैसी बारीकी। प्रगतिवादी कवियों का बल उस रूप या शिल्प पर है जो कथ्य या विषयवस्तु के संप्रेषण के लिए धारदार साबित हो। केदारनाथ अग्रवाल की "युग की गंगा" नागार्जुन की "युगधारा", त्रिलोचन की "धरती" आदि कविताओं में जो रूपगत प्रयोग हैं वे एक विशेष दृष्टि या विचारधारा या जीवनविवेक के अंतर्गत ही सार्थक बन पड़े हैं। त्रिलोचन ने "जीवन का एक लघु प्रसंग" कविता एकदम गद्य के विन्यास में लिखी है। यह रूप की दृष्टि से विलक्षण प्रयोग है जिसकी नवीनता पर पहले किसी का ध्यान नहीं गया।

तब मैं बहुत छोटा था, स्कूल जान का समय हो आया था
मैंने कहा बूआ यह कैसे हो सकता है, वह दर्जा पास कर
चुका हूँ मैं, अब नयी लेनी हैं किताबें पुरानी बेकार हैं।

प्रगतिशील कवियों ने साधारण रूप से असाधारण काम लिया है। निराला ने "नये पत्ते" में जो रूप या शिल्प अपनाया था, प्रगतिवादियों ने उसका अनेक रूपों में अनेक स्तरों पर विकास किया है।

24.5.2 भाषा : काव्य भाषा (अलंकार, बिम्ब, प्रतीक)

प्रगतिवादी कवियों ने भाषा का आदर्श गुण माना है — संप्रेषणीयता। उनकी काव्य भाषा में भी अलंकार, बिम्ब, प्रतीक मिल जाएँगे पर अलंकरण बन कर नहीं, भाषा की सादगी, सरलता, क्षमता और जीवनीशक्ति का प्रमाण बनकर। स्पष्टता, सहजता, प्रखरता, व्यंग्यविदग्धता, उग्रता, साहस, मूर्त्तता ये सभी प्रगतिवादी काव्यभाषा के गुण हैं। त्रिलोचन से शब्द लेकर कहें, प्रगतिवादी कवियों की भाषा सार्थक वहाँ है जहाँ वह "जीवन की हलचल" से संपन्न है। यहाँ भाषा की ऐन्द्रिक क्षमता भी ध्यान आकृष्ट करती है, तद्भवता से मिली शक्ति या ऊर्जा भी —

मेंहदी की अरधान उड़ी। देखा, फिर ठहरा,
कपिश गहगहे विमल फूल खिलखिला रहे हैं
  पिला रहे हैं
अमृत घ्राण को।

वर्षा सीकर भरी हवा, मेंहदी की मँह-मँह
  जी करता है मैं अंजलि भर कर पी जाऊँ

वृक्ष लताएँ पौधे तृण धरती पर डह-डह
करप रहे हैं। मेघ-नगर में ज्योत्स्ना टह-टह
उग आई अब। आँखें सहस कहाँ से लाऊँ।
(दिंगत/त्रिलोचन)

प्रगतिवादियों की भाषा में नये अप्रस्तुत मिल जाएँगे पर अलंकृति भर के लिए नहीं। यहाँ बिम्ब भी सीधे सादे अनलंकृत है। सजावट नहीं मूर्त्तता उनका गुण है। प्रगतिवादी कवियों के प्रतीक भी एक निश्चित विचारधारा या दृष्टि के अधीन ही सार्थकता प्राप्त करते हैं। मुक्तिबोध के जटिल प्रतीक उदाहरण हैं। जैसे "ब्रह्मराक्षस"।

24.5.3 मूर्तिविधान : ऐतिहासिक मूर्त्तता

छायावादी कवियों ने भी भाषा की मूर्तिमत्ता पर बहुत बल दिया है पर छायावाद में यह गुण आगे चलकर विरल होता गया। प्रगतिवादियों ने इस पर यथार्थ दृष्टि के अनुसार ही विशेष बल दिया। प्रगतिवादी काव्यरूप में यह मूर्त्तता ऐतिहासिक चेतना के फलस्वरूप ही प्रकट हुई है। "धरती का शक्तिपत्र" कविता में केदारनाथ अग्रवाल संघर्ष का एक मूर्त्त चित्र उपस्थित करते हैं। यहाँ अप्रस्तुत महत्वपूर्ण नहीं हैं उनके प्रयोग से संभव ऐतिहासिक मूर्त्तता महत्वपूर्ण है।

अभियुक्त क्रोध से पागल हो
कर चला जिरह उन लोगों से,
जैसे गयन्द चीरे कदली का वन का वन
जैसे जनता सामन्ती गढ़ को करे ध्वस्त
जैसे समुद्र की बड़ी लहर
मारे छापा
छोटे जहाज को करे त्रस्त।

यहाँ पूरी स्थिति या वातावरण की मूर्त्तता उल्लेखनीय है।

24.5.4 छन्द-लय

रूप के अंतर्गत कई चीजें आती हैं। छन्द-लय भी। छन्द या लय का प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है। छन्दों में प्रगतिवादियों ने खूब लिखा है। लोकछन्दों में भी और साहित्यिक महत्व के छन्दों में भी। दोहा, बरवै, ग़ज़ल, आल्हा, लावनी से अलग भी लय का विन्यास प्रगतिवादी कविता में देखने योग्य है। कहीं तुकें लय के निर्वाह में सहायक हैं, कहीं वाक्यांशों के विलक्षण उतार-चढ़ाव। मुक्तिबोध की काव्य लय एक ही जान पड़ती है पर उसमें भी जहाँ-तहाँ भेद है और जहाँ एकरूपता है वहाँ भी कथ्य का दबाव नाटकीय गति या लय को प्रभावित करता है। नागार्जुन की कविता में आवृत्ति के नियम से जो लय बनती है उसका एक उदाहरण देखें-

चन्दू मैंने सपना देखा, उछल रहे तुम ज्यों हिरनौटा
चन्दू मैंने सपना देखा, भभुआ से हूँ पटना लौटा
चन्दू मैंने सपना देखा, तुम्हें खोजते बद्री बाबू
चन्दू मैंने सपना देखा, खेल कूद में हो बेकाबू
चन्दू मैंने सपना देखा, कल परसों ही छूट रहे हो
चन्दू मैंने सपना देखा, खूब पतंगें लूट रहे हो
चन्दू मैंने सपना देखा, लाये हो तुम नया कैलेण्डर
चन्दू मैंने सपना देखा, तुम हो बाहर मैं हूँ बाहर
चन्दू मैंने सपना देखा, इतिहास में बैठे हो तुम
चन्दू मैंने सपना देखा, पुलिसभान में बैठे हो तुम।

प्रगतिवादी कवियों ने रूप-तिरस्कार नहीं किया, न छन्द लय के निर्वाह में निष्क्रिय या उदासीन रहे हैं। नागार्जुन की कविता "तीन दिन तीन रात" में लय का विन्यास भिन्न है – बातचीत की लय ही यहाँ आदर्श रूप में काव्य की लय है। प्रगतिवादी परंपरा का विकास जिन नये कवियों में है वे उन्हीं की तरह लय और छन्द के विविध रूपों के प्रति सजग हैं और उन्हें अपना रहे हैं।

बोध प्रश्न 3

1 कोष्ठकों में दिये गये शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरा करें।

क) रूपगत .... प्रगतिवादी कवियों का लक्ष्य नहीं है।
(विकास/परिष्कार)

ख) प्रगतिवादी काव्यभाषा का आदर्शगुण है ....
(साधारणता/सम्प्रेषणीयता)

ग) प्रगतिवादी काव्य रूप में मूर्त्तता .... चेतना का फल है।
(वैयक्तिक/ऐतिहासिक)

घ) प्रगतिवादी कवियों ने काव्य-लय को .... दी है।
(एकरसता/विविधता)

24.6 प्रगतिवाद के प्रमुख कवि

24.6.1 नागार्जुन

प्रगतिवादी काव्यधारा के महत्वपूर्ण कवियों में प्रमुख नागार्जुन के बारे में आज यह बात सहज ही कही जा सकती है कि समकालीन हिन्दी काव्य परिदृश्य में भी उन्हें केन्द्रीयता प्राप्त है। मैथिली काव्य रचनाओं के लिए साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित नागार्जुन खड़ी बोली हिन्दी कविताओं में भी मूल काव्य ऊर्जा, गहरी आंचलिकता, ठेठपन, तद्भवता, व्यंग्यपूर्ण आक्रामकता और गहरी जीवनासक्ति का प्रमाण देते हैं। राजनीतिक कविताएँ नागार्जुन के यहाँ बड़ी संख्या में हैं। उनमें जो सपाट तात्कालिक या इकहरी नहीं हैं, नागार्जुन की बड़ी कवि-प्रतिभा का प्रमाण देती हैं। कविता के लिए जो विषय अकल्पनीय या असंभव माने जाते हैं उनपर भी नागार्जुन ने कविताएँ लिखी हैं और असाधारण सफलता प्राप्त की है। जीवन के प्रति प्रगाढ़ राग की कविताएँ भी उनके यहाँ कम नहीं हैं। पर उनकी कविता का एक रंग वह है जहाँ नफरत, प्यार, विक्षोभ, जिज्ञासा घुलमिल जाते हैं -- उनमें फर्क करना मुश्किल हो जाता है।

नागार्जुन का कविता की अंतर्वस्तु, रूप और भाषा पर अनोखा नियंत्रण दिखाई देता है। एक उदाहरण, उनकी समग्र काव्य क्षमता देखने के लिए प्रकृति से शुरू होकर एक दम सरल विन्यास वाली कविता कैसे राजनीतिक कविता हो जाती है, यह देखने के लिए शीर्षक है -- "काले काले":

काले काले ऋतु रंग
काली काली घन घटा
काले काले गिरि श्रृंग
काली काली छवि घटा
काले काले परिवेश
काली काली करतूत
काली काली करतूत
काले काले परिवेश
काली काली महँगाई
काले काले अध्यादेश।

वाक्य क्रम के बदलाव में एक संयुक्त पद "काले काले" की आवृत्ति में कला भी अपना काम कर रही है और वर्ग संघर्ष या व्यवस्था से संघर्ष का ऐतिहासिक विवेक भी। नागार्जुन को ' आधुनिक कबीर कहा गया है, वह उनके फक्कड़ क्रांतिकारी व्यक्तित्व को देखते हुए। उनकी कला में भी यही व्यक्तित्व समाया है।

24.6.2 केदारनाथ अग्रवाल

केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिवादी काव्यधारा के प्रतिनिधि तथा महत्वपूर्ण कवि हैं। रूमानी आदर्शवाद से यथार्थवाद तक, रूपासक्ति से जीवनासक्ति तक और कोमल रागात्मकता से खुरदुरे वस्तुचित्रण तक केदार की कविता के अनेक रंग हैं। भावुकता केदार के यहाँ आत्मीयता का पर्याय है। पत्नी प्रेम पर जैसी अकुण्ठ कविताएँ केदारनाथ अग्रवाल ने लिखी हैं, किसी ने नहीं लिखीं। प्रेम, सौन्दर्य, प्रकृति के गहरे लगाव के साथ केदार संघर्षशील जनता के कठोर जीवन, कठिन श्रम और दृढ़ आस्था की ओर बराबर सजग रहे हैं। "चन्द्रगहना से लौटती बेर" तथा "बसंती हवा" से केदार की खास पहचान बनी। यह सहजता, यह स्वाभाविकता सच्ची जीवनासक्ति से ही पैदा होती है।

एक बीते के बराबर
यह हरा ठिगना चना
बाँधे मुरैठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल का
सजकर खड़ा है।

और सरसों की न पूछो
हो गयी सबसे सयानी
हाथ पीले कर लिये हैं।

केदारनाथ अग्रवाल स्वीकार करते हैं कि मार्क्सवादी विचारधारा के कारण ही उन्हें नयी जीवन दृष्टि और नयी काव्यदृष्टि मिली। ''देवली के नरसंहार'' जैसी तात्कालिक घटनाओं पर भी केदार ने कविताएँ लिखी हैं और अपनी वर्ग चेतना का प्रमाण दिया है।

24.6.3 शमशेर बहादुर सिंह

शमशेर बहादुर सिंह को प्रगतिवादी काव्यधारा से सम्बद्ध करने में उन्हें कठिनाई होती है जो प्रगतिवाद को स्थिर मतवाद ही मानते हैं, उसकी काव्यात्मक संभावनाओं को महत्व नहीं देते। शमशेर को रूपवादी या प्रयोगशील मानकर अलग कर दिया जाता है। शमशेर विचारधारा की दृष्टि से मार्क्सवादी हैं और मार्क्सवाद को विशेष महत्व देते हैं। जनता के प्रति उनकी सहानुभूति किसी से कम नहीं है। पर कविता को वे उसकी मुक्त संभावनाओं में देखते हैं। रूप और शिल्प उन्हें जीवन की प्रकट सच्चाइयों की तरह ही जरूरी जान पड़ते हैं। ''लेकर सीधा नारा'' शमशेर की वह महत्वपूर्ण कविता है जो प्रगतिवादी आंदोलन के दौर में विशेष चर्चित हुई।

लेकर सीधा नारा
कौन पुकारा
अंतिम आशाओं की सन्ध्याओं से
मैं समाज तो नहीं, न मैं कुल
जीवन
कण समूह में हूँ मैं केवल
एक कण
कौन सहारा।

शमशेर मानते रहे हैं कि उनकी असली जमीन रोमानी हो थी पर ''अमन का राग'', ''यह शाम है'' जैसी कविताएँ वे अपनी आस्था के अनुरूप लिखते रहे हैं। सांप्रदायिक दंगों पर उन्होंने बाद में जो कविताएँ लिखी हैं वे प्रगतिशील विचारधारा, जीवन दृष्टि के बगैर असंभव है।

24.6.4 गजानन माधव मुक्तिबोध

मुक्तिबोध की कविता का प्रगतिशील यथार्थवादी काव्यधारा से सहज संबंध बिठाने में डॉ. रामविलास शर्मा तक को कठिनाई होती है। अब शायद यह बात अधिक स्पष्टतापूर्वक कही जा रही है कि प्रगतिशील यथार्थवादी कविता की ही कम से कम दो परंपराएँ हैं – एक में नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल आते हैं, दूसरी में शमशेर,मुक्तिबोध। मुक्तिबोध ने सीधे-सीधे स्वीकार किया है कि एक कला सिद्धांत के पीछे विशेष जीवन दृष्टि होती है, उसके पीछे एक जीवन दर्शन होता है और उसके पीछे एक राजनैतिक दृष्टि भी होती है। मुक्तिबोध की महत्वपूर्ण लम्बी कविताएँ राजनैतिक दृष्टि से वंचित नहीं हैं। यह राजनीतिक दृष्टि मार्क्सवाद ही है जो व्यापक अर्थ में विश्वदृष्टि भी है। ''अन्तःकरण का आयतन'' कविता में मुक्तिबोध अपना पक्ष स्पष्ट करते हैं -

पृथ्वी के प्रसारों पर
जहाँ भी स्नेह या संगर
वहाँ पर एक मेरी छटपटाहट है
वहाँ है जोर गहरा एक मेरा भी
सतत मेरी उपस्थिति
नित्य सन्निधि है।

मुक्तिबोध ने यथार्थ चित्रण के लिए फैन्टेसी का भी उपयोग किया और इस प्रकार एकरस

जान पड़ने वाले काव्यरूप में विविधता, नाटकीयता, गति पैदा की। अँधेरी दुनिया के रहस्यों को भेदते हुए मुक्तिबोध के जो विचार स्फुलिंग सामने आते हैं वे एक निश्चित विचारधारा या जीवन दृष्टि का प्रमाण देते हैं। वे सत्ता को किस तरह बेनकाब करते हैं इसका सटीक उदाहरण है "भूलगलती" नाम कविता – जिसमें भूलगलती सिंहासन पर बैठी है और "सच" नाम का पात्र गिरफ्तार करके लाया जाता है। "अँधेरे में" मुक्तिबोध की सबसे महत्वपूर्ण कविता है – आधुनिक कविता की विशिष्ट उपलब्धियों में एक।

24.6.5 त्रिलोचन

त्रिलोचन की एक अलग पहचान है। परम्परा में ही उन्हें रखना हो तो वे तुलसी और निराला की परंपरा को आगे बढ़ाने वाले कवि हैं। उन्होंने राजनीतिक विषयों पर कविताएँ नहीं लिखी हैं कि उनकी विचारधारा तक सीधे पहुँचना आसान हो। पर साधारण विषयों पर, जीवन के बहुत मामूली प्रसंगों पर लिखते हुए भी वे अपनी दृष्टि का प्रमाण देते हैं। सानेट त्रिलोचन का अपना आविष्कार है। सानेटों में जितनी सहजता से वे आत्मकथा या सामाजिक संदेश बिखेरते चलते हैं, उसी से उनकी साफ दृष्टि और असाधारण काव्यक्षमता का पता चलता है। त्रिलोचन की कविताएँ सीधे जीवन को पकड़ती हैं।

त्रिलोचन के सानेटों में आत्मभर्त्सना के जो अंकुठ संकेत हैं उनसे उनकी जीवनशक्ति प्रकट होती है। "भीख माँगते उसी त्रिलोचन को देखा कल/जिसको समझे था है तो है यह फौलादी" "नगई महरा" जैसे इतिवृत्त में उनका ढंग दूसरा है – बतकही वाला ढंग –। कृत्रिमता, बनावटीपन से मुक्त यह सहज आत्मीयता त्रिलोचन का काव्यवैशिष्ट्य है।

> शब्दकार इन शब्दों में जीवन होता है
> ये भी चलते फिरते और बात करते हैं।

बोध प्रश्न 4

1) कोष्ठकों में दिए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरा करें।
   क) जीवन के प्रति प्रगाढ़ .... की कविताएँ नागार्जुन के यहाँ कम नहीं हैं। (भाव/राग)
   ख) भावुकता केदार के यहाँ .... का पर्याय है। (सरलता/आत्मीयता)
   ग) शमशेर विचारधारा की दृष्टि से .... हैं। (भाववादी/मार्क्सवादी)
   घ) मुक्तिबोध की लम्बी कविताएँ .... दृष्टि से वंचित नहीं हैं। (सांस्कृतिक/राजनीतिक)
   च) त्रिलोचन का अपना आविष्कार है .... । (प्रगीत/सानेट)

24.7 प्रगतिवाद का महत्व

ऐतिहासिक महत्व

प्रगतिवादी का एक काव्य प्रवृत्ति के रूप में और व्यापक साहित्यिक आंदोलन के रूप में ऐतिहासिक महत्व है। जिस समय अतिशय सूक्ष्मता और अति-कल्पनाशीलता के नाम पर हिन्दी कविता गूढ़ रहस्योन्मुख होती जा रही थी, प्रगतिवाद ने कविता को अपने समय के यथार्थ से, यथार्थ-बोध के अनेक रूपों से जोड़ा और कविता और राजनीति के बीच ऐसा घनिष्ठ संबंध विकसित किया जिससे आगे की कविता भी लाभान्वित हुई। प्रगतिवाद ने कविता संबंधी अवधारणा बदली और अपने समय के तीखे सवालों की गूँज कविता में पैदा की। प्रगतिवाद ने एक नये ही संदर्भ में 'कविता किसके लिए' – जैसा सवाल उठाया। प्रगतिवाद अपनी ऐतिहासिक भूमिका के लिए साहित्य में स्थायी महत्व का विषय हो गया है।

साहित्यिक महत्व

प्रगतिवादी कविता उदाहरण है कि उसने साहित्य भूमि का विस्तार किया। कविता का संसार अधिक यथार्थ, प्रामाणिक, व्यापक और विश्वसनीय लगने लगा। कविता की अंतर्वस्तु और रचनाविधान में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। उपेक्षित जान पड़ने वाले विषयों, चरित्रों को काव्यात्मक प्रतिष्ठा मिली। कविता ने प्रत्यक्ष जीवन, लोकरूपों, लोक प्रचलित छन्दों का नया उपयोग किया और नयी संभावनाएँ खोजीं।

बोध प्रश्न 5

1 कोष्ठकों में दिये शब्दों से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरा करें।

क) प्रगतिवाद की ऐतिहासिक .... है।
(भूमिका,)

ख) प्रगतिवाद ने .... का विस्तार किया।
(साहित्य बोध/साहित्य भूमि)

24.8 सारांश

"प्रगतिवाद" केवल काव्य प्रवृत्ति नहीं, व्यापक काव्यान्दोलन या साहित्यिक आंदोलन है। उसके पीछे मार्क्सवादी विचारधारा है जो राजनीतिक दृष्टि से आगे विश्वदृष्टि के रूप में भी महत्वपूर्ण है। प्रगतिवाद या प्रगतिशील साहित्य शब्द का प्रयोग 1936 के आसपास हुआ जब प्रगतिशील लेखक संघ स्थापित हो चुका था पर साहित्य में 1930 के बाद ही यह रूझान प्रकट होने लगा था जिसके पीछे बदली हुई राजनीतिक, सामाजिक वास्तविकता थी। प्रगतिवाद एक अर्थ में छायावाद का विकास है दूसरे अर्थ में छायावाद के विरुद्ध विकसित काव्यप्रवृत्ति। अन्तर्वस्तु की दृष्टि से प्रगतिवाद में ऐतिहासिक चेतना सामाजिक यथार्थ दृष्टि, परिवेश या प्रकृति के प्रति लगाव, जीवन के प्रति स्वीकृति का भाव, मानवीय संबंधों में समानता का आग्रह और भविष्योन्मुखी दृष्टि का महत्व है। रचनाविधान की दृष्टि से प्रगतिवाद में यथार्थबोध के अनुरूप नये रूपों की खोज, जीवन की हलचल से भरी भाषा, यथार्थ ज्ञान से प्रेरित ऐतिहासिक मूर्त्तता, लोकरूपों या छन्दों का आवश्यकतानुसार उपयोग, सहजता का शिल्प आदि महत्वपूर्ण हैं। प्रगतिवाद प्रयोगवाद या अन्य आधुनिकतावादी प्रवृत्ति के उभार के कारण कभी बीच में केन्द्र में न रह गया हो किंतु विकास उसका कभी स्थगित नहीं हुआ। यही कारण है कि आज भी जो नयी कविता लिखी जा रही है उसे प्रगतिवाद का ही विकास कहा जाएगा। प्रगतिवाद के प्रमुख कवि हैं : नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर, मुक्तिबोध और त्रिलोचन। बाद के कवियों में केदारनाथ सिंह, धूमिल, कुमार विकल, अरुण कमल के नाम लिये जा सकते हैं। यों, ऐसे नामों की सूची बड़ी हो सकती है क्योंकि यह प्रवृत्ति आज पुनः केन्द्रीयता प्राप्त कर चुकी है।

24.9 अभ्यास

1 निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त (तीन वाक्य) उत्तर लिखिए:

क) प्रगतिवाद की किस व्यापक आंदोलन से तुलना की गयी है?

....
....
....

ख) किस अर्थ में प्रगतिवाद का चरित्र अखिल भारतीय है?

....
....
....

ग) निराला ने कविता की मुक्ति की व्याख्या किस प्रकार की है?

....
....
....

घ) निम्नलिखित काव्यांश की विशेषताएँ इस दृष्टि से स्पष्ट कीजिए कि प्रगतिवाद का स्वरूप सामने आ सके।

जली ठूँठ पर बैठकर गयी कोकिला कूक
बाल न बाँका कर सकी शासन की बंदूक

....

....

....

24.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

प्रगतिवाद: विजय शंकर मल्ल
आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ: नामवर सिंह
प्रगतिवाद: रेखा अवस्थी
मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य: राम विलास शर्मा
इतिहास और आलोचना: नामवर सिंह
शब्द और मनुष्य: परमानंद श्रीवास्तव

24.11 बोध प्रश्न/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1 ख) 2 ख)

3 प्रगतिवाद से अभिप्राय उस साहित्यिक प्रवृत्ति से है जिसमें एक प्रकार की इतिहास चेतना, सामाजिक इतिहासदृष्टि, वर्गचेतन विचारधारा, प्रतिबद्धता या पक्षधरता, गहरी जीवनासक्ति, परिवर्तन के लिए सजगता और एक प्रकार की भविष्योन्मुखी दृष्टि मौजूद हो।

बोध प्रश्न 2

1 क) ऐतिहासिक ख) वर्ग चेतना प्रधान ग) सामाजिक यथार्थ बोध
घ) विवेकपूर्वक च) यथार्थवादी

2 अपने समय का विवेक और अपने समय या युग की राजनीतिक, सामाजिक वास्तविकता का बोध होना ही ऐतिहासिक चेतना है।

बोध प्रश्न 3

1 क) परिष्कार ख) सम्प्रेषणीयता ग) ऐतिहासिक घ) विविधता

बोध प्रश्न 4

1 क) राग ख) आत्मीयता ग) मार्क्सवादी घ) राजनीतिक च) सानेट

बोध प्रश्न 5

1 क) भूमिका ख) साहित्यभूमि

अभ्यास 1

क) प्रगतिवाद केवल काव्य प्रवृत्ति नहीं, व्यापक साहित्यिक आंदोलन है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उसकी व्यापकता पर विशेष बल दिया है। उन्होंने व्यापकता की दृष्टि से प्रगतिवाद को केवल भक्ति आंदोलन से तुलनीय बताया है।

ख) प्रगतिवाद का चरित्र एक विशेष अर्थ में अखिल भारतीय है। उसको अभिव्यक्ति हिन्दी के साथ बँगला, मराठी, पंजाबी, मलयालम, कश्मीरी, उर्दू आदि अनेक भाषाओं में मिली।

ग) निराला ने कहा है कि कविता की मुक्ति मनुष्यों की मुक्ति के ही समकक्ष है। वे मुक्त छंद का महत्व बता रहे थे। इसी संदर्भ में कविता की मुक्ति का प्रश्न उठाया गया।

घ) जली ठूँठ पर बैठकर गयी कोकिला कूक
बाल न बाँका कर सकी शासन की बंदूक

नागार्जुन ने दोहा छन्द में यह कविता लिखी है – "शासन की बन्दूक"। यहाँ सत्ता या व्यवस्था के बर्बर दमन चक्र की ओर संकेत है। "जली ठूँठ पर" संकेत है उस गोली कांड का, जो हो चुका है। संघर्ष थमने वाला नहीं है। कोयल जली ठूँठ पर बैठ जो कूक जाती है, मानो दमनकारी शक्तियों की धज्जियाँ उड़ा जाती है। शासन की बन्दूक बाल बाँका नहीं कर पाती। प्रगतिवादी कविता में संघर्ष का ही पक्ष लिया जाता है। यहाँ भी सब कुछ सीधे नहीं कहा जाता। संकेत, बिम्ब प्रतीक की सहायता से भी कहा जाता है पर संकेत भी इतने स्वाभाविक सहज होते हैं कि अलग से उनकी ओर ध्यान नहीं जाता। ऐतिहासिक चेतना और सामाजिक यथार्थदृष्टि के बल पर ही इतना सार्थक सटीक काव्यचित्र संभव हो पाता है।